August 2016

242-124

Monday 29

(1)

5/9/17 | [illegible]

B.A. - I B.Sc.
कक्षा I
हिन्दी साहित्य

सूरदास

डॉ० उपमा कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
[illegible] कॉलेज,
इलाहाबाद

सूरदास का काव्य परिचय - क्रमशः:-

सूर का वात्सल्य वर्णन एकांगी नहीं है। इसमें बाल कृष्ण की चेष्टाओं और प्रकृतियों का वर्णन है तो मातृ हृदय की व्यंजना भी है। संतान पक्ष भी है और मातृ-पितृ पक्ष भी है। इसमें संयोग और वियोग दोनों पक्षों का वर्णन किया गया है।

वात्सल्य की तरह श्रृंगार क्षेत्र के भी सूर एकछत्र सम्राट हैं। कृष्ण की किशोरावस्था से लेकर युवावस्था तक ब्रज की गोपियों के साथ उनकी क्रीड़ाओं को उन्होंने जितना स्वाभाविक और प्रभावकारी वर्णन किया है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

सूर के काव्य में भ्रमरगीत का अत्यधिक महत्व है। उपालम्भ काव्य में वियोग श्रृंगार का चित्रण सूर की वेदना की असीम गहराई का परिचायक है। भ्रमरगीत की गोपियों के मथुरा से उद्धव के प्रति उलाहने का, उद्धव की बातों के खंडन की उनकी प्रवृत्ति से अधिक उनकी वियोग दशा का चित्कार निकलता है।

सूर की गोपियों की वेदना विश्व विरहिणी की शाश्वत वेदना है। इनकी

क्रमशः —

हिन्दी 5/7/[illegible] (2)
सूरदास की भक्ति
भक्ति भावना — [illegible]
B. A. Part I

वेदना को हम देकर और काल की व्यथा को कोई नहीं सुनते हैं। यह सांसारिक और भावों देखा है सखा —

निसि दिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहति पावस ऋतु हम पै,
जब ते स्याम सिधारे।

श्रृंगार के क्षेत्र में संयोग और वियोग दोनों पक्षों का वर्णन सूर ने कुशलता से किया है। वियोग की सभी दशाओं का वर्णन भी सूर ने किया है। शास्त्रीय मापदंड पर सूर का वियोग वर्णन सही है।

सूरदास भक्त कवि थे। इनके पदों में भक्ति का अगाध सागर लहराता है। इनकी भावना में वल्लभाचार्य का चिंतन धारा और पुष्टि-मार्गी भावना की झलक मिलती है। कृष्ण भक्ति भावना के आलोक में सगुण भक्ति भावना के ये पोषक हैं। बालकृष्ण इनके आराध्य देव हैं। इनकी भक्ति भावना में समर्पण एवं आत्म-निवेदन का एकनिष्ठ भाव है। इनके विनय के पद वस्तुतः हृदय को छू लेते हैं। सूर की दृष्टि में संसार सागर से पार उतरने में भक्ति ही एकमात्र उपाय है।

सूर के पदों में विभिन्न दार्शनिक मत मतान्तरों का वर्णन तो नहीं है, पर ये वल्लभाचार्यों के शुद्धाद्वैत दर्शन से,

क्रमशः —

प्रभावित था। ये काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि को भक्ति के क्षेत्र में बाधक मानते हैं। इन्होंने निर्गुण का खंडन और सगुण का मंडन किया है।

सूर के पदों को गीतों की संज्ञा दी जाती है। जयदेव और विद्यापति के बाद सूर के हिन्दी के गीतों ने अपने ढंग का सम्मान [illegible]। तथा सूर ने भी उन्हें अपनाकर और धन्य कर दिया।

सूर की भाषा ब्रज भाषा है। सूर की भाषा की सरसता, स्वाभाविकता, मंजुलता, प्रवाहमयता, सजीवता इत्यादि की समता कोई कर नहीं सकता है।

कुछ कवि थे पर आज नहीं हैं। कुछ आज हैं पर कल नहीं रहेंगे। पर कुछ ऐसे भी हैं जो कल भी थे, आज भी हैं और आने वाले कल में भी बने रहेंगे। सूरदास ऐसे ही महाकवि थे। वे कल भी थे, आज भी हैं और आनेवाले कल में भी अपने गुणों के कारण जन-जन के कंठहार बने रहेंगे।